



ONLYIAS
BY PHYSICS WALLAH

उद्गान

प्रिलिम्स वाला (स्टैटिक)

प्रिलिम्स 2025

आधुनिक भारत



विचक एवं कॉम्प्रिहेन्सिव रिवीजन सीरीज

विषय सूची

1. भारत में यूरोपियों का आगमन 1

- ऐतिहासिक व्यापारिक संबंध..... 1
- यूरोपीय भारत क्यों आना चाहते थे?..... 1
- पुर्तगाली भारत में सबसे पहले क्यों पहुँचे?..... 1
- भारत में प्रमुख पुर्तगाली..... 2
- पुर्तगालियों के अधीन भारत का प्रशासन 2
- भारत में डच प्रशासन 3
- ब्रिटिश नियंत्रण के अधीन प्रमुख क्षेत्र 4
- भारत में फ्रांसीसी 5
- कर्नाटक युद्ध (1740-1763): सर्वोच्चता के लिए
आंगल-फ्रांसीसी संघर्ष 5
- ब्रिटिश विजय की पूर्व संध्या पर भारत..... 6
- क्षेत्रीय राज्यों का उदय 7
- क्षेत्रीय राज्यों की प्रमुख विशेषताएँ..... 8
- भारत में ब्रिटिश शक्ति
का विस्तार और सुदृढीकरण..... 9
- कंपनी के विरुद्ध मैसूर का प्रतिरोध..... 10
- सिंध की विजय 12
- पंजाब विजय 12
- ब्रिटिश भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंध 13

2. 1857 का विद्रोह 15

- 1857 से पहले के विद्रोह 15
- 1857 का विद्रोह: प्रमुख कारण 15
- विद्रोह का विश्लेषण 16

3. भारत में आधुनिक राष्ट्रवाद की शुरुआत (1858-1905) 17

- राष्ट्रीय आंदोलन के प्रमुख चरण..... 17
- आधुनिक राष्ट्रवाद के विकास को प्रेरित करने वाले कारक 17
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का गठन 19
- नरमपंथी चरण का उद्भव (1885-1905) 21

4. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1905-18) 23

- बंगाल का विभाजन (1905) 23
- स्वदेशी और बहिष्कार आंदोलन (1903-1905) 23

5. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन: 1918-22 - गाँधीवादी चरण 31

- प्रारंभिक जीवन और प्रभाव..... 31
- दक्षिण अफ्रीका प्रकरण 32
- भारत में गांधीजी का आगमन 32
- रौलेट एक्ट..... 33
- जलियाँवाला बाग नरसंहार (13 अप्रैल, 1919)..... 34
- खिलाफत और असहयोग आंदोलन..... 34
- खिलाफत और असहयोग आंदोलन..... 35
- असहयोग आंदोलन पर जनता की प्रतिक्रिया:..... 36
- आंदोलन का अंतिम चरण 36
- घटना पर विविध विचार..... 37

6. वैचारिक धाराएँ और राजनीतिक यथार्थ: 1920 के दशक में भारतीय राष्ट्रवाद 38

- स्वराजवादी और समाजवादी विचारों का उदय 38
- 1920 के दशक में भारत में नई शक्तियों का उदय 39
- भारत में वामपंथी आंदोलन..... 39
- साइमन कमीशन (1927)..... 42
- नेहरू रिपोर्ट (1928) 42

7. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1929-42) 44

- सविनय अवज्ञा आंदोलन की ओर अग्रसर 44
- सविनय अवज्ञा आंदोलन..... 45
- सविनय अवज्ञा आंदोलन का अंत 47
- गोलमेज सम्मेलन 48
- सविनय अवज्ञा आंदोलन का पुनः आरंभ (1932-1934)..... 48
- गांधीजी का हरिजन अभियान और जाति व्यवस्था पर विचार 49
- पहले चरण की बहस (1934-35) 50
- भारत सरकार अधिनियम, 1935..... 51
- कांग्रेस के भीतर दूसरे चरण की बहस (1937) 52
- द्वितीय विश्व युद्ध के मद्देनजर राष्ट्रवादी प्रतिक्रिया..... 53
- अगस्त प्रस्ताव (अगस्त 1940) 55
- व्यक्तिगत सत्याग्रह 56
- क्रिप्स मिशन (मार्च 1942) 56

8. भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन (1942-47) 58

- भारत छोड़ो आंदोलन (1942)..... 58
- सुभाष चंद्र बोस: भारत के स्वतंत्रता संग्राम के एक क्रांतिकारी नेता 61
- भारतीय राष्ट्रीय सेना (आईएनए): गठन और गतिविधियाँ..... 62
- युद्ध के बाद का राष्ट्रीय परिदृश्य..... 62
- कांग्रेस चुनाव (1945-1946)..... 63
- आईएनए का अवलोकन 63
- तीन प्रमुख घटनाक्रम (1945-46 की शरद ऋतु)..... 63
- नौसेना विद्रोह: ब्रिटिश उपनिवेशवाद के लिए अंतिम सहारा 64
- कैबिनेट मिशन (1946)..... 64
- अंतरिम सरकार का गठन 65
- वेवेल का 'ब्रेकडाउन प्लान'..... 65

9. ब्रिटिश भारत में संवैधानिक, प्रशासनिक एवं न्यायिक विकास 69

- ब्रिटिश भारत का संवैधानिक विकास 69
- ब्रिटिश भारत में पुलिस और सैन्य व्यवस्था 70
- ब्रिटिश भारत में सैन्य संरचना और शासन..... 71
- ब्रिटिश भारत में न्यायिक विकास 72
- प्रशासनिक पुनर्गठन 73
- भारत में ब्रिटिश विदेश नीति 75
- अकाल नीति का विकास..... 76
- रियासतों के प्रति ब्रिटिश नीति 77

10. सामाजिक-धार्मिक सुधार आंदोलन 79

- परिचय 79
- महिलाओं की स्थिति में सुधार 79
- जाति संबंधी मुद्दे और सुधार..... 81
- औपनिवेशिक भारत में निम्न जाति आंदोलन..... 82

11. अंग्रेजों के विरुद्ध जनता का प्रतिरोध 91

- नागरिक विद्रोह..... 91
- आदिवासी विद्रोह..... 94

12. ब्रिटिश नीतियाँ और उनके आर्थिक प्रभाव 107

- औपनिवेशिक भारत के आर्थिक शोषण के चरण..... 107
- औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की राष्ट्रवादियों द्वारा आलोचना..... 108
- ब्रिटिश नीतियों का कृषि प्रभाव..... 109

13. आधुनिक भारत की महत्त्वपूर्ण समितियाँ 113

- भारतीय शिक्षा एवं प्रेस में विकास 113
- औपनिवेशिक भारत में शिक्षा का विकास 116
- वुड्स डिस्पैच के बाद के घटनाक्रम (19वीं सदी के अंत में)..... 117
- भारतीय प्रेस का विकास 120

14. आधुनिक भारत के प्रमुख भारतीय व्यक्तित्व 128

- भारतीय व्यक्तित्व..... 128
- प्रमुख भारतीय महिला नेत्रियाँ..... 136
- स्वदेशी आंदोलन से संबंधित व्यक्तित्व 139
- असहयोग आंदोलन से संबंधित प्रमुख व्यक्तित्व..... 139
- सविनय अवज्ञा और भारत छोड़ो आंदोलन से संबंधित व्यक्तित्व 140

15. विदेशी व्यक्तित्व: गवर्नर जनरल, वायसराय और विदेशी स्वतंत्रता सेनानी 141

- गवर्नर जनरल और वायसराय 141

1

भारत में यूरोपियों का आगमन

भारत में सबसे पहले आने वाले पुर्तगाली थे, लेकिन अंततः अंग्रेज विशाल भारतीय क्षेत्र पर अधिकार करने में सफल रहे और औद्योगिक युग की अग्रणी शक्ति बनकर उभरे।

ऐतिहासिक व्यापारिक संबंध

- भारत और यूरोप के बीच सदियों से व्यापार होता रहा है, जैसा कि संगम युग में देखा गया, जब भारत में रोमन सोना और सामान की खोज की गई थी।
- व्यापार मार्गों में अमु दरिया नदी, कैस्पियन सागर और काला सागर के माध्यम से रेशम मार्ग और अरब सागर और भूमध्य सागर के माध्यम से समुद्री मार्ग शामिल थे।
- इतालवी व्यापारियों ने भूमध्य सागर पर अपने भौगोलिक लाभ का उपयोग करके प्रभाव प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

भारत में यूरोपीय आगमन : एक नज़र में

विवरण	पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी	डच ईस्ट इंडिया कंपनी	ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी	डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी	फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी
स्थापना	1498	1602	1600	1616	1664
मुख्यालय/राजधानी	गोवा (पुर्तगाली)	पुलिकट (बाद में नागापट्टिनम)	कलकत्ता (दिल्ली, क्राउन शासन के तहत)	त्रांकेबार	पांडिचेरी (पुदुच्चेरी)
व्यापारिक केंद्र (स्थापना वर्ष)	गोवा (1510), कोचीन (1503), दिव (1535), बसीन (1534), कन्नौर (1501), कालीकट (1500)	पुलिकट (1609), सूरत (1616), कोचीन (1663), चिन्सुरा (1653)	सूरत (1612), मद्रास (1639), बॉम्बे (1668), कलकत्ता (1690), हुगली (1651), मसूलीपट्टनम (1611)	त्रांकेबार (1620), सेरामपुर (1755)	पांडिचेरी (1674), चंदरनगर (1673), माहे (1721), कराइकल (1739), यनम (1723)
प्रस्थान वर्ष	1961	1825	1858 (क्राउन का शासन); 1947 में भारत छोड़ दिया	1845 (ब्रिटिश को बेचा)	1954
पहला कारखाना	कालीकट में 1500 ईस्वी	मसूलीपट्टनम में 1605	सूरत में स्थायी कारखाना 1613; मसूलीपट्टनम में अस्थायी कारखाना 1611	त्रांकेबार, तंजोर के पास- 1620	भारत में पहला कारखाना सूरत में, 1668

पुर्तगाली भारत में सबसे पहले क्यों पहुँचे?

- **पोप का अधिकार:** पुर्तगाल के राजकुमार हेनरी को वर्ष 1454 में पोप निकोलस पंचम द्वारा एक अधिकारपत्र दिया गया था जिससे उन्हें भारत तक के पूर्वी तटों के खोज का अधिकार मिल गया था।
- **टॉर्डेसिलस की संधि 1494:** टॉर्डेसिलस की संधि (1494) के अनुसार, वर्ष 1497 में पुर्तगाल और स्पेन ने गैर-ईसाई दुनिया को केप वर्डे द्वीप समूह से 1,300 मील पश्चिम में अटलांटिक में एक काल्पनिक रेखा द्वारा विभाजित किया। पुर्तगाल को रेखा के पूर्व के क्षेत्रों पर अधिकार स्थापित करने और कब्जा करने का अधिकार दिया गया था, इसमें भारत भी शामिल था।

यूरोपीय भारत क्यों आना चाहते थे?

- यूरोपीय और भारतीयों के बीच सीधा संपर्क पुनः स्थापित करना और वे अरब मुस्लिम मध्यस्थों पर अपनी निर्भरता कम करना चाहते थे।
- मसाले, चाय, रेशम और कीमती रत्नों जैसी भारतीय वस्तुओं तक आसान पहुँच, जिनकी दुनिया भर में उच्च माँग थी।
- पुनर्जागरण की भावना ने, जहाज निर्माण और नौवहन में प्रगति के साथ मिलकर, सभी यूरोपियों को समुद्र का पता लगाने एवं पूर्व तक पहुँचने के लिए उत्सुक बना दिया था।
- यूरोप में इस अवधि के दौरान, कई क्षेत्रों विशेषतः आर्थिक विकास में तीव्र वृद्धि देखी गई।
 - इस आर्थिक समृद्धि ने विलासिता की वस्तुओं, विशेष रूप से खाना पकाने और संरक्षण के लिए उपयोग किए जाने वाले मसालों की माँग बढ़ा दी।

- **नौवहन:** वर्ष 1487 में, **बार्थोलोम्यो दियास** ने केप ऑफ गुड होप का चक्कर लगाया और इसे भारत समझकर अफ्रीका के पूर्वी तट तक पहुँच गया। हालाँकि अंततः मई, 1498 में वास्को डी गामा भारत पहुँचा, जिससे यूरोपीय व्यापार के लिए समुद्री मार्ग खुल गया।

भारत में प्रमुख पुर्तगाली

● वास्कोडिगामा:

- वर्ष 1498 में अब्दुल मजीद नाम के एक गुजराती नाविक के नेतृत्व में भारत पहुँचा और उसका जमोरिन (कालीकट के शासक) द्वारा मित्रवत स्वागत किया गया, जिसके माध्यम से वह काली मिर्च के व्यापार से भारी मुनाफा हासिल करने में सक्षम हुआ।
- वह 1501 में पुनः भारत आया और कन्नानोर में एक व्यापारिक कारखाना स्थापित किया।

वास्को डी गामा ने तीन बार भारत का दौरा किया— वर्ष 1498, 1501 और 1524 में। उसके तीसरी बार आगमन के तीन महीने बाद ही 1524 में कोचीन में उसकी मृत्यु हो गई।

● पेड्रो अल्वारेज कैबरेल:

- पेड्रो अल्वारेज ने मसालों के व्यापार के लिए यात्रा शुरू की और सितंबर 1500 में कालीकट में एक कारखाना स्थापित किया।
- जब कालीकट में पुर्तगाली कारखाने पर हमला किया गया तो संघर्ष शुरू हो गया, जिससे पुर्तगाली हताहत हुए। जवाबी कार्रवाई में, कैबरेल ने अरब के व्यापारिक जहाजों को जब्त कर लिया, जिससे जान माल का काफी नुकसान हुआ। माल जब्त कर लिया गया और जहाजों को जला दिया गया। कैबरेल द्वारा कालीकट पर बमबारी की गई।
- संघर्ष के बावजूद, कैबरेल ने बाद में कोचीन और कन्नानोर में स्थानीय शासकों के साथ सफलतापूर्वक बातचीत की।

● फ्रांसिस्को डी अल्मेडा:

- वर्ष 1505 में पुर्तगाल के राजा ने फ्रांसिस्को डी अल्मेडा को भारत का गवर्नर नियुक्त किया।
- अल्मेडा का मिशन पुर्तगाली स्थिति को मजबूत करना, मुस्लिम व्यापार को नष्ट करना और अदन, हार्मुज तथा मलक्का पर कब्जा करना था। उन्हें अंजादिवा, कोचीन, कन्नानोर और किलवा में किले बनाने की सलाह दी गई थी।
- जमोरिन के विरोध और मिस्स के मामलुक सुल्तान की धमकी का सामना करना पड़ा। वेनिस के व्यापारियों के समर्थन से मिस्सवासियों ने पुर्तगाली हस्तक्षेप का मुकाबला करने के लिए एक बेड़ा खड़ा किया। वर्ष 1507 में, मिस्स और गुजरात की संयुक्त नौसेना द्वारा दीव के पास एक नौसैनिक युद्ध में एक पुर्तगाली स्कवॉड्रन को हरा दिया गया, जिसके परिणामस्वरूप अल्मेडा के बेटे की मृत्यु हो गई।
- अल्मेडा ने वर्ष 1508 में दोनों नौसेनाओं को कुचलकर अपनी हार का बदला लिया।
- अल्मेडा का उद्देश्य **ब्लू वाटर पॉलिसी** (कार्टेज सिस्टम) को लागू करके पुर्तगालियों को हिंद महासागर का स्वामी बनाना था।

- ब्लू वाटर नीति हिंद महासागर की किलेबंदी थी, न कि हिंद महासागर में पुर्तगाली व्यापार की स्थापना के लिए।
- कार्टेज प्रणाली पुर्तगाली ईस्ट इंडिया कंपनी की एक लाइसेंसिंग प्रणाली थी जिसका उपयोग हिंद महासागर में व्यापार को नियंत्रित करने के लिए किया जाता था।

● अल्फांसो डी अल्बुकर्क:

- अल्फांसो डी अल्बुकर्क भारत में पुर्तगाली गवर्नर के रूप में सफल हुए और उन्हें पूर्व में पुर्तगाली शक्ति का वास्तविक संस्थापक माना जाता है।
- हिंद महासागर पर पुर्तगाली नियंत्रण बनाए रखने के लिए हार्मुज, मालाबार, मलक्का के साथ-साथ लाल सागर में सफलतापूर्वक अड्डे स्थापित किए।
- उन्होंने अन्य जहाजों के लिए 'कार्टेज सिस्टम' शुरू की।

[UPSC 2022]

- वर्ष 1510 में बीजापुर सुल्तान से गोवा का अधिग्रहण किया, जो सिकंदर महान के बाद यूरोपीय नियंत्रण में पहला भारतीय क्षेत्र बन गया।
- तंबाकू और काजू जैसी नई फसलें, या नारियल की बेहतर वृक्षारोपण किस्में लाई गईं।

● नीनो दा कुन्हा:

- नवंबर 1529 में भारत में पुर्तगाली गवर्नर बने।
- वर्ष 1530 में पुर्तगाली सरकार का मुख्यालय कोचीन से गोवा स्थानांतरित कर दिया गया।
- गुजरात के बहादुर शाह ने वर्ष 1534 में हुमायूँ के साथ अपने संघर्ष के दौरान पुर्तगालियों से मदद माँगी। उन्होंने बेसिन द्वीप को उसकी निर्भरता के साथ सौंप दिया और पुर्तगालियों को दीव में एक आधार बनाने का वादा किया।
- वर्ष 1536 में जब हुमायूँ गुजरात से वापस चला गया तो संबंधों में विकृति आ गई। शहर के निवासियों के पुर्तगालियों से लड़ने के कारण संघर्ष उत्पन्न हुआ। बहादुर शाह का उद्देश्य विभाजन की दीवार खड़ी करना था जिससे पुर्तगालियों के साथ बातचीत शुरू हो सके।
- वर्ष 1537 में बातचीत के दौरान गुजरात के शासक को पुर्तगाली जहाज पर बुलाया गया और उसकी हत्या कर दी गई।
- दा कुन्हा का लक्ष्य बंगाल में पुर्तगाली प्रभाव को बढ़ाना था, पुर्तगाली नागरिकों को हुगली में अपना मुख्यालय बनाकर बसाना था।

नोट: मध्यकालीन शासक कृष्णदेव राय ने पुर्तगालियों को भटकल में एक किला बनाने की अनुमति दी थी।

[UPSC 2024]

पुर्तगालियों के अधीन भारत का प्रशासन

भौगोलिक विस्तार:

- उनके नियंत्रण में महत्वपूर्ण क्षेत्र थे गोवा, मुंबई, दमन और दीव, साथ ही दक्षिण में व्यापारिक चौकियाँ तथा पूर्वी तट पर सैन्य चौकियाँ, जैसे चेन्नई में सैन थोम एवं तमिलनाडु में नागपट्टिनम।

- मैंगलोर, कालीकट, केन्नौर और कोचीन जैसे शहर पुर्तगालियों के लिए महत्वपूर्ण व्यापार केंद्र बन गए। 16वीं शताब्दी में पश्चिम बंगाल में हुगली एक बहुत ही महत्वपूर्ण बस्ती बन गई।

प्रशासन की संरचना:

- वायसराय प्रशासन का प्रमुख होता था और उसका कार्यकाल तीन वर्ष का होता था। बाद के वर्षों में वायसराय को सचिव के साथ-साथ एक परिषद का भी समर्थन प्राप्त था।
- वेदोर दा फर्जेडा दूसरा सबसे महत्वपूर्ण अधिकारी था जो राजस्व, कार्गो और बेड़े के प्रेषण के लिए जिम्मेदार था।
- 'कारकों' (factors) की सहायता से कप्तानों का पुर्तगाल के अधीन किलों पर नियंत्रण था।

धार्मिक नीति:

- अपने सभी क्षेत्रों में ईसाई धर्म का प्रचार करना और मुसलमानों का विरोध करना चाहते थे।
- पुर्तगाली शुरू में हिंदुओं के प्रति सहिष्णु थे, लेकिन बाद में उन्होंने धर्मांतरण को बढ़ावा देने के लिए हिंदुओं पर अत्याचार किया।
- पादरी रोडक्ल्फो एक्वाविवा और एंटोनियो मोनसेरेट को वर्ष 1580 में मुगल सम्राट अकबर के दरबार में भेजा गया और उनके साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया गया। हालाँकि, लगातार प्रयासों के बाद भी, अकबर को परिवर्तित करने की पुर्तगाली उम्मीदें कभी भी वास्तविकता नहीं बन पाईं।

मुगलों के साथ राजनीतिक संबंध:

- अकबर और जहाँगीर ने पादरीयों के साथ सम्मानपूर्वक व्यवहार किया, जिससे शुरुआती वर्षों में अच्छे संबंध बने रहे।
- पुर्तगाली समुद्री डकैती के कृत्यों ने भी मुगल सरकार को परेशान कर दिया, जिससे संबंध तनावपूर्ण हो गए।
- शाहजहाँ के शासनकाल में, पुर्तगालियों ने वे सभी सुविधाएँ खो दीं जो उन्हें सम्राट अकबर के समय से मुगल दरबार में प्राप्त थीं।
 - 24 जून, 1632 को हुगली पर मुगलों की घेराबंदी शुरू हुई जिसके परिणामस्वरूप तीन महीने बाद हुगली पर कब्जा कर लिया गया।

अन्य संबंधित तथ्य:

- **कोलंबिया:** यह कोलंबस की 1492 की यात्रा के बाद 15वीं और 16वीं शताब्दी के दौरान अमेरिका, पश्चिम अफ्रीका तथा पुरानी दुनिया के बीच पौधों, जानवरों, संस्कृति, आबादी, प्रौद्योगिकी, बीमारियों एवं विचारों के व्यापक हस्तांतरण को संदर्भित करता है।
- **यूरोपीय अन्वेषण का प्रभाव:** अमेरिका में आक्रामक प्रजातियों और संक्रामक रोगों का परिचय।
- **प्रमुख आदान-प्रदान:**
 - पुरानी दुनिया से नई दुनिया: फसलें: कॉफी, गेहूँ, जौ, चावल, गन्ना, कपास, चुकंदर।
 - नई दुनिया से पुरानी दुनिया: फसलें: एवोकैडो, काजू, कोको बीन, आलू, मक्का, रबर, तंबाकू इत्यादि। [UPSC 2019]

भारत में डच प्रशासन

डचों का आगमन और प्रसार:

- कॉर्नेलिस डी हाउटमैन वर्ष 1596 में सुमात्रा और बंताम तक पहुँचने वाले पहले डचमैन थे।
- नीदरलैंड की ईस्ट इंडिया कंपनी का गठन वर्ष 1602 में किया गया था जिसके पास व्यापार करने, क्षेत्र पर कब्जा करने के साथ-साथ जरूरत पड़ने पर युद्ध में शामिल होने की शक्ति थी।
- डचों ने अपना पहला कारखाना वर्ष 1605 में मसूलीपट्टनम (आंध्र में) में स्थापित किया। उन्होंने पुर्तगालियों से मद्रास (चेन्नई) के पास नागपट्टम पर कब्जा कर लिया और इसे दक्षिण भारत में अपना मुख्य गढ़ बना लिया।
- अन्य महत्वपूर्ण डच कारखाने सूरत (1616), बिमिलीपट्टम (1641), कराईकल (1645), चिनसुरा (1653), बारानगर, कासिम बाजार (मुर्शिदाबाद के पास), बालासोर, पटना, नागपट्टम (1658) और कोचीन (1663) में थे।
- वे यमुना घाटी और मध्य भारत में निर्मित नील, बंगाल, गुजरात तथा कोरोमंडल से कपड़ा एवं रेशम, बिहार से शोरा व गंगा घाटी से अफीम और चावल ले जाते थे।
- **नोट:** मुख्य व्यापार: नील, कपड़ा, रेशम, शोरा, अफीम और काली मिर्च।
- **काली मिर्च और मसालों के व्यापार पर डचों का एकाधिकार था।** वे रेशम, कपास, नील, चावल और अफीम में भी रुचि रखते थे।

डचों का पतन:

- डचों की रुचि साम्राज्य-निर्माण में नहीं थी, वे व्यापार पर ध्यान केंद्रित करना चाहते थे।
- एंग्लो-डच प्रतिद्वंद्विता, जैसा कि अंबोयना नरसंहार (1623, इंडोनेशिया) जैसी घटनाओं में देखा गया, बाद में अपने भारतीय क्षेत्रों में स्थानांतरित हो गई।
- वर्ष 1667 में दोनों पक्षों के बीच एक समझौता हुआ जिसके द्वारा ब्रिटिश इंडोनेशिया पर अपने सभी दावे वापस लेने पर सहमत हो गए और डच इंडोनेशिया में अपने अधिक लाभदायक व्यापार पर ध्यान केंद्रित करने के लिए भारत से प्रस्थान कर गए।
- तीसरे एंग्लो-डच युद्ध में, डच सेना ने बंगाल की खाड़ी में अंग्रेजी जहाजों पर कब्जा कर लिया। 7 साल के युद्ध के दौरान अंततः अंग्रेजों ने जवाबी कार्रवाई की और वर्ष 1759 में हुगली की लड़ाई जीत ली।
- **हुगली की लड़ाई (1759),** जिसे बेदरा की लड़ाई और चिनसुराह की लड़ाई के नाम से भी जाना जाता है, इसने भारत में डच महत्वाकांक्षाओं को खत्म कर दिया एवं अंग्रेजों के उत्थान का कारण बना।
- वर्ष 1580 में फ्रांसिस ड्रेक की दुनिया भर की यात्रा और वर्ष 1588 में स्पेनिश आर्मडा पर अंग्रेजों की जीत ने अंग्रेजों में उद्यम की एक नई भावना पैदा की।

भारत में डेनिश:

- डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना वर्ष 1616 में हुई। तंजौर के पास ट्रांक्यूबार (1620) में पहली फैक्ट्री।
- सेरामपुर (कलकत्ता के पास) उनकी सबसे महत्वपूर्ण बस्ती बन गई।
- वाणिज्यिक या राजनीतिक महत्वाकांक्षाओं के बजाय मिशनरी गतिविधियों पर ध्यान केंद्रित किया।

- डेनिश ईस्ट इंडिया कंपनी की स्थापना वर्ष 1616 में हुई थी और उन्होंने वर्ष 1620 में तंजौर के पास त्रावनकोर में अपना पहला कारखाना स्थापित किया।
- कलकत्ता के पास सेरामपुर उस समय की सबसे महत्वपूर्ण डेनिश बस्ती थी।
- डेनिश वाणिज्यिक या राजनीतिक हितों के बजाय मिशनरी गतिविधियों में अधिक रुचि रखते थे।

भारत में ब्रिटिश शक्ति:

प्रारंभिक उद्यम

- **1580 ई.:** फ्रांसिस ड्रेक की विश्व यात्रा।
- **1588 ई.:** स्पेनिश आर्मडा पर अंग्रेजी विजय ने ब्रिटिश उद्यम को बढ़ावा दिया।
- **31 दिसंबर, 1600:** महारानी एलिजाबेथ प्रथम ने ईस्ट इंडीज में व्यापार करने के लिए लंदन के गवर्नर और व्यापारिक कंपनी को विशेष व्यापारिक अधिकार के साथ एक चार्टर जारी किया।

प्रारंभिक व्यापारिक प्रयास:

- **महारानी एलिजाबेथ प्रथम** ने 31 दिसंबर 1600 को ईस्ट इंडीज में विशेष व्यापार अधिकारों के साथ 'गवर्नर एंड कंपनी ऑफ मर्चेण्ट्स ऑफ लंदन ट्रेडिंग इनटू द ईस्ट इंडीज' नामक कंपनी के लिए एक चार्टर जारी किया, जिसे बाद में अनिश्चित काल के लिए बढ़ा दिया गया।
- **1609: कैप्टन हॉकिन्स**, एक फैक्ट्री स्थापित करने और व्यापार रियायतें हासिल करने के उद्देश्य से जहाँगीर के दरबार में आया।
- **1611:** अंग्रेजों ने मसूलीपट्टनम में व्यापार शुरू किया और वर्ष 1616 में वहाँ एक कारखाना स्थापित किया।
- **1612:** कैप्टन थॉमस बेस्ट ने वर्ष 1612 में सूरत के तट पर पुर्तगालियों को हरा दिया, जिसके परिणामस्वरूप जहाँगीर ने वर्ष 1613 में अंग्रेजों को सूरत में एक कारखाना स्थापित करने की अनुमति दे दी।
- **1615: सर थॉमस रो**, जेम्स प्रथम के एक मान्यता प्राप्त राजदूत, वर्ष 1615 में आया और फरवरी वर्ष 1619 तक रहा। हालाँकि जहाँगीर के साथ एक वाणिज्यिक संधि संपन्न करने में असफल रहे, थॉमस रो ने आगरा, अहमदाबाद और ब्रोच में कारखाने स्थापित करने की अनुमति सहित कई विशेषाधिकार प्राप्त किए। [UPSC 2021]

ब्रिटिश नियंत्रण के अधीन प्रमुख क्षेत्र

- अंग्रेजों को गोलकुंडा में स्वतंत्र रूप से व्यापार करने का विशेषाधिकार देने के लिए वर्ष 1632 में गोलकुंडा के सुल्तान द्वारा 'गोल्डन फरमान' जारी किया गया था।
- **बॉम्बे को राजा चार्ल्स द्वितीय को दहेज उपहार** के रूप में दिया गया था, जिन्होंने बाद में इसे वर्ष 1668 में 10 पाउंड के वार्षिक भुगतान पर ईस्ट इंडिया कंपनी को दे दिया था। बाद में, बॉम्बे पश्चिमी प्रेसीडेंसी का मुख्यालय बन गया।
- वर्ष 1639 में, चंद्रगिरि के शासक (विजयनगर साम्राज्य के प्रतिनिधि) ने मद्रास में एक गढ़वाली फैक्ट्री बनाने की अनुमति दी, जो बाद में **फोर्ट सेंट जॉर्ज** बन गई और मसूलीपट्टनम को दक्षिण भारत में अंग्रेजी मुख्यालय के रूप में बदल दिया गया। [UPSC 2022]

- अंग्रेजों ने अपनी व्यापारिक गतिविधियों को पूर्व की ओर बढ़ाया और वर्ष 1633 में महानदी डेल्टा के हरिहरपुर तथा बालासोर (ओडिशा में) में कारखाने स्थापित किए।
- बंगाल में, शाह शुजा ने वार्षिक भुगतान के बदले में अंग्रेजों को व्यापार करने की अनुमति दी। बाद में, हुगली (1651), कासिम बाजार, पटना में कारखाने स्थापित किए गए।
 - विलियम हेजेज ने एक किलेबंद बस्ती बनाने की कोशिश की लेकिन असफल रहा।
 - जॉब चार्नॉक समझौता में सफल रहा और उन्होंने एक संधि पर हस्ताक्षर किया जिसके तहत वर्ष 1691 में सुतानुति में एक अंग्रेजी कारखाने की अनुमति दी गई।
 - वर्ष 1698 में, अंग्रेज तीन गाँवों सुतानुति, गोबिंदपुर और कालिकाता (कालीघाट) की जमींदारी उनके मालिकों से खरीदने की अनुमति प्राप्त करने में सफल रहे।
 - वर्ष 1700 में इस किलेबंद बस्ती का नाम **फोर्ट विलियम** रखा गया जब यह पूर्वी प्रेसीडेंसी पद (कलकत्ता) की सीट भी बनी और **सर चार्ल्स आयर** इसके पहले अध्यक्ष बने।

फर्रुखसियर का फरमान (1715):

- वर्ष 1715 में, जॉन सरमैन ने मुगल सम्राट फर्रुखसियर से तीन फरमान हासिल किए, जिससे कंपनी को बंगाल, गुजरात और हैदराबाद में विशेषाधिकार प्राप्त हुए। फरमानों को कंपनी का **मैग्ना कार्टा** माना जाता था।
- इनमें बंगाल में अतिरिक्त सीमा शुल्क से छूट, दस्तक जारी करने की अनुमति, कलकत्ता के आसपास अधिक भूमि किराए पर लेना और हैदराबाद में व्यापार में शुल्क से मुक्ति शामिल थी।
- सूरत में, कंपनी को 10,000 रुपए के वार्षिक भुगतान पर सभी कार्यों से छूट दी गई थी। बंबई में ढाले गए कंपनी के सिक्के पूरे मुगल साम्राज्य में पहचाने जाते थे।

कंपनी विकास:

- **1615:** कंपनी को कैप्टनों को कमीशन जारी करने का अधिकार दिया गया।
- **1625:** राज्यपालों और निदेशकों को दीवानी तथा फौजदारी मामलों में न्यायिक शक्तियाँ प्रदान की गईं।
- **1686:** अपनी नौसेना के लिए एडमिरल नियुक्त करने और विभिन्न सिक्के ढालने का अधिकार दिया गया।
- **1698-1702:** वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, ब्रिटिश सरकार को £2 मिलियन प्रदान करने में असमर्थ रहे।
- **जनवरी 1701 - अप्रैल 1702:** एकाधिकार व्यापार लाइसेंस के साथ एक समानांतर कंपनी उभरी, सर विलियम नॉरिस औरंगजेब के राजदूत के रूप में नियुक्त किये गए।
- **1702-1709:** दोनों कंपनियों ने एक समझौते के तहत एक साथ काम किया।
- **1709:** पुरानी कंपनी ने अपना चार्टर रानी ऐनी को सौंप दिया; संयुक्त कंपनी ईस्ट इंडीज में व्यापार करने वाले इंग्लैंड के व्यापारियों ने कब्जा कर लिया।
- **1708:** दो कंपनियों का यूनाइटेड कंपनी ऑफ मर्चेण्ट्स ऑफ इंग्लैंड ट्रेडिंग में विलय हुआ।

- ईस्ट इंडीज, वर्ष 1708 से 1873 तक ईस्ट इंडिया कंपनी के प्रभुत्व का प्रतीक है।

भारत में फ्रांसीसी

व्यापार के उद्देश्य से भारत आने वाले अंतिम यूरोपीय फ्रांसीसी थे।

- कॉम्पैनी डेस इंडेस ओरिएण्टल्स (फ्रांसीसी ईस्ट इंडिया कंपनी) की स्थापना वर्ष 1664 में **लुई XIV के शासनकाल** के दौरान मंत्री कोलबर्ट द्वारा की गई थी। कंपनी को हिंद और प्रशांत महासागरों में फ्रांसीसी व्यापार पर 50 साल का एकाधिकार एवं साथ ही अन्य रियायतें भी मिलीं।
- भारत में **पहली फ्रांसीसी फैक्ट्री वर्ष 1667 में सूरत** में फ्रांसिस केरान द्वारा स्थापित की गई थी। कैरन के साथ आए एक फ्रांसीसी व्यक्ति मर्करा ने गोलकुंडा के सुल्तान से पेटेंट प्राप्त करने के बाद वर्ष 1669 में मसूलीपट्टनम में एक और फ्रांसीसी फैक्ट्री की स्थापना की।
- वर्ष 1673 में, फ्रांसीसियों ने बंगाल के मुगल सूबेदार शाइस्ता खान से कलकत्ता के पास चंद्रनगर में एक टाउनशिप स्थापित करने की अनुमति प्राप्त की।
- फ्रांसिस मार्टिन को वर्ष 1674 में **शेर खान लोदी** द्वारा बीजापुर द्वारा पांडिचेरी का स्थान प्रदान किया गया था। बाद में, **पांडिचेरी** भारत में फ्रांसीसियों का मुख्य केंद्र बन गया।
- अन्य महत्वपूर्ण फ्रांसीसी व्यापार केंद्र माहे, कराईकल, बालासोर थे जिन्होंने भारत में उनके विस्तार में मदद की।
- वर्ष 1693 में डचों ने पांडिचेरी पर कब्जा कर लिया लेकिन बाद में **रेजविक की संधि** के तहत इसे फ्रांसीसियों को वापस दे दिया गया।
- बाद में, वर्ष 1720 और 1742 के बीच गवर्नर लेनोर एवं डुमास के नेतृत्व में फ्रांसीसी कंपनी को पुनर्गठित किया गया।

कर्नाटक युद्ध (1740-1763):

सर्वोच्चता के लिए आंग्ल-फ्रांसीसी संघर्ष

प्रथम कर्नाटक युद्ध (1740-48):

- कर्नाटक यूरोपीय लोगों द्वारा कोरोमंडल तट और उसके भीतरी इलाकों को दिया गया नाम था। यह **ऑस्ट्रियाई उत्तराधिकार युद्ध के कारण** यूरोप में हुए एंग्लो-फ्रेंच युद्ध का विस्तार था।
- वर्ष 1748 में **ऐक्स-ला शापेल की संधि** पर हस्ताक्षर के साथ समाप्त हुआ, जिसने ऑस्ट्रियाई युद्ध को समाप्त कर दिया और मद्रास को अंग्रेजों को वापस सौंप दिया।
- प्रथम कर्नाटक युद्ध को **सेंट थॉम की लड़ाई** द्वारा चिह्नित किया गया था, जहाँ कैप्टन पैराडाइज के तहत एक छोटी फ्रांसीसी सेना ने कर्नाटक के नवाब अनवरुद्दीन और महफूज खान की सेना को हराया था। इस जीत ने दक्कन में एंग्लो-फ्रांसीसी संघर्ष में एक अनुशासित सेना की प्रभावशीलता और नौसैनिक बल के महत्व को उजागर किया।

द्वितीय कर्नाटक युद्ध (1749-54):

- प्रथम कर्नाटक युद्ध में सफल फ्रांसीसी गवर्नर डुप्ले ने दक्षिण भारत में फ्रांसीसी प्रभाव बढ़ाने का प्रयास किया।

- यह युद्ध निजाम-उल-मुल्क (हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य के संस्थापक) की मृत्यु के बाद **उत्तराधिकार संघर्ष** के कारण हुआ था, जिसमें फ्रांसीसियों ने क्रमशः दक्कन और कर्नाटक में मुजफ्फर जंग एवं चंदा साहिब के दावों का समर्थन किया था, जबकि अंग्रेज नासिर जंग और अनवरुद्दीन के पक्ष में थे।
- **अंबर का युद्ध (1749):** वर्ष 1749 में, मुजफ्फर जंग, चंदा साहिब और फ्रांसीसियों ने अंबर की लड़ाई में अनवरुद्दीन को हराया। मुजफ्फर जंग दक्कन का सूबेदार बन गया और डुप्ले को कृष्णा नदी के दक्षिण में मुगल क्षेत्रों का गवर्नर नियुक्त किया गया।
- एक अंग्रेजी कंपनी एजेंट **रॉबर्ट क्लाइव** ने त्रिचनापल्ली पर दबाव कम करने के लिए वर्ष 1751 में अर्कोट पर कब्जा कर लिया। 53 दिनों की घेराबंदी के बावजूद, चंदा साहब अर्कोट पर दोबारा कब्जा करने में विफल रहे। वर्ष 1752 में मुहम्मद अली ने चंदा साहब को फाँसी दे दी। वित्तीय घाटे के कारण वर्ष 1754 में डुप्ले को वापस बुला लिया गया और गेडह्यू उसका उत्तराधिकारी बना। अंग्रेज और फ्रांसीसी देशी विवादों में हस्तक्षेप न करने पर सहमत हुए तथा अपने कब्जे वाले क्षेत्रों को बरकरार रखा।
- **पांडिचेरी की संधि (1754):** मुहम्मद अली खान वालजाह की नवाब के रूप में पुष्टि करते हुए युद्ध समाप्त हुआ और फ्रांसीसी वापसी की माँग की।

तृतीय कर्नाटक युद्ध:

- यूरोप में **सप्त वर्षीय युद्ध** के परिणामस्वरूप शुरू हुआ जिसका भारत में आंग्ल-फ्रांस प्रतिद्वंद्विता पर प्रभाव पड़ा।
- **युद्ध का प्रकोप (1757):** यूरोप में व्यापक संघर्ष के बीच शत्रुता फिर से शुरू हुई।
 - **मद्रास की घेराबंदी (1758):** काउंट डी लाली के तहत फ्रांसीसियों द्वारा कब्जा कर लिया गया।
 - **ब्रिटिश जवाबी हमला:** वर्ष 1759 में सर आयर कूट के नेतृत्व में अंग्रेजों ने मद्रास पर पुनः कब्जा कर लिया।
- **वांडीवाश की लड़ाई (1760):** तीसरे कर्नाटक युद्ध की निर्णायक लड़ाई 22 जनवरी 1760 को तमिलनाडु के वांडीवाश में अंग्रेजों ने जीती थी। अंग्रेजों के जनरल आयर कूट ने **काउंट थॉमस आर्थर डी लाली** के अधीन फ्रांसीसी सेना को पूरी तरह से परास्त कर दिया और **बुस्सी** को बंदी बना लिया। इस लड़ाई के कारण भारतीय उपमहाद्वीप में अंग्रेज सर्वोच्च यूरोपीय शक्ति के रूप में उभरे।
- **पेरिस शांति संधि (1763)** ने फ्रांसीसियों को उनके कारखाने लौटा दिए, लेकिन युद्ध के बाद उनका राजनीतिक प्रभाव खत्म हो गया।

फ्रांसीसी अंग्रेजों से क्यों हार गए?

- अंग्रेजी कंपनी कम सरकारी नियंत्रण वाला एक निजी उद्यम था, जबकि फ्रांसीसी कंपनी एक सरकारी कंपनी थी जिससे विलंबता और सरकारी नीतियों के कारण बाधित थी।
- अंग्रेजी नौसेना की श्रेष्ठता ने उन्हें फ्रांस और भारत में उसकी संपत्ति के बीच समुद्री संपर्क को कम करने में मदद की।
- अंग्रेजों ने विस्तार के दौरान कभी भी अपने व्यावसायिक हितों की उपेक्षा नहीं की, इस प्रकार उनके पास युद्ध लड़ने के लिए आवश्यक धन की कमी नहीं होती थी। दूसरी ओर, क्षेत्रीय महत्वाकांक्षा के अधीन अपने व्यावसायिक

हितों के अधीन होने के परिणामस्वरूप फ्रांसीसी कंपनी आर्थिक रूप से कमजोर हो गई थी।

- ब्रिटिशों के पास हमेशा सर आयर कूट और रॉबर्ट क्लाइव जैसे बेहतर सैन्य कमांडर थे, जबकि फ्रांसीसियों के पास केवल एक अच्छे सैन्य रणनीतिकार के रूप में डुप्ले था।

अन्य यूरोपीय शक्तियों की

तुलना में अंग्रेजों की सफलता के पीछे के कारण:

- इंग्लिश ईस्ट इंडिया कंपनी एक निजी कंपनी थी जो निदेशक मंडल द्वारा नियंत्रित थी, उनके प्रतिस्पर्धियों के विपरीत, जो राज्य के स्वामित्व वाली और सामंतवादी थीं।
- अंग्रेजों की नौसेना श्रेष्ठता ने उन्हें पुर्तगालियों को हराने के साथ-साथ हिंद महासागर में अन्य प्रतिस्पर्धियों के विस्तार को सीमित करने में मदद की।
- इंग्लैंड में औद्योगिक क्रांति ने भाप इंजन और पावरलूम जैसी मशीनों के माध्यम से उत्पादकता में वृद्धि की तथा इंग्लैंड को अपना प्रभुत्व बनाए रखने में मदद की।
- ब्रिटिश सैनिक अच्छी तरह से प्रशिक्षित थे और कुशल नेतृत्व में सेवा दी गई थी, जिससे अंग्रेजों को युद्ध में बड़ी सेनाओं को हराने में मदद मिली।
- ब्रिटेन में राजनीतिक स्थिरता ने उसके व्यापार को समर्थन दिया, जबकि फ्रांस जैसे अन्य देश क्रांतियों और हिंसा में फँस गए थे।
- स्पेन, पुर्तगाल या डच की तुलना में, ब्रिटेन धर्म को लेकर कम उत्साही था और ईसाई धर्म के प्रचार के लिए कम प्रेरित था। इस वजह से, इसके शासन के विषयों ने इसे अन्य औपनिवेशिक शक्तियों की तुलना में कहीं अधिक स्वीकार किया।
- बैंक ऑफ इंग्लैंड, जो दुनिया का पहला केंद्रीय बैंक था, ने अंग्रेजों को धन प्राप्त करने के लिए ऋण बाजार का उपयोग करने में मदद की। इस प्रकार, कंपनी के पास अपने प्रतिद्वंद्वियों को हराने के लिए धन उपलब्ध रहता था। इसकी तुलना में, आर्थिक रूप से ब्रिटेन के साथ प्रतिस्पर्धा करने की कोशिश में फ्रांसीसी अंततः दिवालिया हो गए।

ब्रिटिश विजय की पूर्व संध्या पर भारत

आठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में शक्तिशाली मुगलों का पतन शुरू हो गया—

- औरंगजेब (1658-1707) के शासनकाल ने भारत में मुगल सत्ता के अंत की शुरुआत हो गई थी।
- बाद में, मुहम्मद शाह के शासन के दौरान, हैदराबाद, बंगाल, अवध और पंजाब के स्वतंत्र राज्यों की स्थापना हुई।
- मराठों ने शाही सिंहासन के उत्तराधिकार के लिए जोर लगाना शुरू कर दिया, क्योंकि कई क्षेत्रीय प्रमुखों ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा करना शुरू कर दिया।

मुगलों के सामने चुनौतियाँ:

बाहरी चुनौतियाँ:

- नादिर शाह का आक्रमण (1738-39): करनाल की लड़ाई (1739) में मुगल सेना को हराया और मुहम्मद शाह (मुगल शासक) को बंदी बना लिया।

- मयूर सिंहासन, कोहिनूर हीरा और कई मूल्यवान वस्तुएँ मुगलों से छीन ली गईं।
- नादिर शाह ने काबुल सहित सिंधु के पश्चिम में रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण मुगल क्षेत्र हासिल कर लिया। इस प्रकार, भारत एक बार फिर उत्तर-पश्चिम से होने वाले हमलों के प्रति असुरक्षित हो गया।

● अहमद शाह अब्दाली का आक्रमण:

- वर्ष 1757 में दिल्ली पर कब्जा कर लिया और मुगल सम्राट की निगरानी के लिए एक अफगान कार्यवाहक को शासन सौंप दिया।
- अब्दाली ने आलमगीर द्वितीय को मुगल सम्राट और नजीब-उद-दौला (रोहिला प्रमुख) को मीर बख्शी के रूप में मान्यता दी, जिसे अब्दाली के एजेंट के रूप में कार्य करना था।
- पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761) में अब्दाली भारत वापस आया और उसने उन सभी मराठों को हराया जिन्होंने रघुनाथ राव के नेतृत्व में दिल्ली पर कब्जा कर लिया था।

औरंगजेब के बाद कमजोर शासक:

- बहादुर शाह प्रथम (1707-1712): इसे 'शाह-ए-बेखबर' के नाम से भी जाना जाता है।
 - उन्होंने मराठों, राजपूतों और जाटों के साथ शांति नीति अपनाई।
 - बाद में सिख नेता बंदा बहादुर विद्रोह का विद्रोह हुआ।
- जहाँदार शाह (1712-13)
 - जुल्फिकार खान की मदद से सम्राट बने, जिन्हें बाद में प्रधानमंत्री नियुक्त किया गया।
 - उन्होंने साम्राज्य के वित्त को मजबूत करने के लिए इजारा प्रणाली की स्थापना की। जहाँदार शाह ने जजिया कर समाप्त कर दिया।
- फर्रुखसियर (1713-1718)
 - वह सैय्यद बंधुओं (अब्दुल्ला खान और हुसैन अली) की मदद से जहाँदार शाह की हत्या के परिणामस्वरूप सत्ता में आया, जो बाद में उनके दरबार में वजीर और मीर बख्शी बन गए।
 - इसने धार्मिक सहिष्णुता की नीति का पालन किया जैसा कि जजिया और तीर्थयात्रा कर को समाप्त करने जैसे कदमों में देखा गया।
 - वर्ष 1717 का फरमान देकर अनजाने में अंग्रेजों को आगे बढ़ने में सहायता की। बाद में वर्ष 1719 में, सैय्यद बंधुओं ने पेशवा बालाजी विश्वनाथ की मदद से फर्रुखसियर को गद्दी से हटा दिया। इस प्रकार फर्रुखसियर अपने सरदारों द्वारा मारा जाने वाला पहला मुगल सम्राट बन गया।
- रफी-उद-दराजत (1719): सभी मुगल शासकों में उसका शासनकाल सबसे छोटा था।
- रफी-उद-दौला (1719): 'शाहजहाँ द्वितीय' की उपाधि धारण की। उन्हें सैय्यद बंधुओं द्वारा सिंहासन पर बिठाया गया था, जिन्होंने सत्ता केंद्रित कर ली थी।
- मुहम्मद शाह रंगीला (1719-48)
 - उन्होंने निजाम-उल-मुल्क की मदद लेकर सैय्यद भाइयों को मार डाला, जिन्होंने बाद में हैदराबाद के स्वतंत्र राज्य की स्थापना की।

- उन्हें करनाल की लड़ाई (1739) में नादिर शाह से हार का सामना करना पड़ा और बाद में उन्हें कैद कर लिया गया।
- **अहमद शाह बहादुर (1748-1754)**
 - उन्हें एक अक्षम शासक के रूप में देखा गया जिसने राज्य मामलों को 'रानी माँ' उधम बाई के हाथों में छोड़ दिया। बाद में उधम बाई को 'किबला-ए-आलम' की उपाधि दी गई।
- **आलमगीर द्वितीय (1754-1759)**
 - वह सम्राट जहाँदार शाह का पुत्र था। ईरानी आक्रमणकारी अहमद शाह अब्दाली जनवरी 1757 में दिल्ली पहुँचा।
 - उसके शासनकाल के दौरान, जून 1757 में **प्लासी की लड़ाई** लड़ी गई। आलमगीर द्वितीय की हत्या कर दी गई।
- **शाह आलम द्वितीय (1760-1806)**
 - उनके शासनकाल में दो निर्णायक लड़ाइयाँ हुईं, अर्थात् **पानीपत की तीसरी लड़ाई (1761)** और **बक्सर की लड़ाई (1764)** बक्सर की लड़ाई के बाद इलाहाबाद की संधि (1765) पर हस्ताक्षर किए गए जिसमें निम्नलिखित शर्तें लगाई गईं—
 - उसने अंग्रेजों को बंगाल, बिहार और उड़ीसा की दीवानी का अधिकार देने का एक फरमान जारी किया तथा उन्हें अंग्रेजी संरक्षण में ले लिया गया, एवं उन्हें अंग्रेजों द्वारा पेंशन दी गई।
- **अकबर शाह द्वितीय (1806-1837)**
 - उन्होंने राजा राम मोहन राय को '**राजा**' की उपाधि दी।
 - वर्ष 1835 में, उनके शासनकाल के दौरान, ईस्ट इंडिया कंपनी ने खुद को मुगल सम्राट की अधीनता के रूप में संदर्भित करना बंद कर दिया और सम्राट के नाम वाले सिक्कों का उत्पादन बंद कर दिया।
- **बहादुर शाह द्वितीय (1837-1857):** अंतिम मुगल सम्राट।
 - 1857 के विद्रोह के दौरान उन्हें '**भारत का सम्राट**' घोषित किया गया था।
 - बाद में उन्हें अंग्रेजों गिरफ्तार करके, रंगून भेज दिया।
- **पतन के कारण:** औरंगजेब के अत्यधिक विस्तार ने संसाधनों पर दबाव डाला और सहयोगियों को अलग-थलग कर दिया, जिससे मुगल प्रशासन का निर्माण हुआ।
- **व्यापक असंतोष:** कमजोर उत्तराधिकारियों के पास शासन कौशल का अभाव था, जिससे गिरावट तेज हो गई। इससे उनका ध्यान सैन्य से विलासिता की ओर स्थानांतरित हो गया, और अदालती गुटों ने स्थिरता को नष्ट कर दिया। एक त्रुटिपूर्ण उत्तराधिकार प्रणाली के कारण ऐसा हुआ।
- **सत्ता संघर्ष:** पेशवाओं के अधीन मराठा उत्थान ने सत्ता को चुनौती दी, जबकि सैन्य वफादारी कम हो गई।
- कमांडरों के लिए, अनुशासन को कमजोर करने तथा छापों और कुप्रबंधन से आर्थिक कठिनाई समाप्त हो गई।
- जागीरदारी प्रणाली में वित्त और प्रतिस्पर्धा ने कुलीन प्रतिद्वंद्विता को तीव्र कर दिया। इससे विभाजनकारी नीतियों को बढ़ावा मिला।
- विद्रोहों, विदेशी आक्रमणों (नादिर शाह, अब्दाली) ने प्रतिष्ठा को नुकसान पहुँचाया और इससे यूरोपीय उपस्थिति उजागर हो गई तथा व्यापार एवं युद्ध में ठहराव आया।

क्षेत्रीय राज्यों का उदय

- औरंगजेब के शासनकाल के दौरान, जाट, सिख और मराठा जैसे क्षेत्रीय गुट मुगलों के खिलाफ उठ खड़े हुए।
- मुगलों का नियंत्रण कमजोर हो गया। औरंगजेब के बाद, बहादुर शाह प्रथम द्वारा राजपूत शक्ति पर अंकुश लगाने के प्रयासों को बढ़ावा मिला, जिससे फैली अशांति भविष्य के गठबंधनों को कठिन बना रही थी।



क्षेत्रीय राज्यों का वर्गीकरण

स्वतंत्र राज्य

- ऐसे राज्य मुख्य रूप से मुगलों की अपने प्रांतों पर कमजोर पकड़ के कारण अस्तित्व में आए।
- मैसूर और राजपूत क्षेत्र इसके उदाहरण हैं।

उत्तराधिकारी राज्य

- ये पूर्व मुगल प्रांत थे, जो साम्राज्य से अलग होने के बाद अलग-अलग राज्यों में परिवर्तित हो गए।
- हालाँकि उन्होंने मुगल शासक की सर्वोच्चता का विरोध नहीं किया, लेकिन उनके राज्यपालों द्वारा लगभग स्वतंत्र और वंशानुगत शक्तियों के निर्माण ने इन क्षेत्रों में स्व-शासित शासन के उदय का संकेत दिया।
- अवध, बंगाल और हैदराबाद इसके उल्लेखनीय उदाहरण हैं।

नवीन राज्य

- ये राज्य मुगल शासन के खिलाफ विद्रोह करने वाले गुटों द्वारा स्थापित किए गए थे।
- मराठा, सिख और जाट क्षेत्र इसके प्रमुख उदाहरण हैं।

हैदराबाद:

- इसकी स्थापना **किलिच खान** ने की थी, जो **निजाम-उल-मुल्क** के नाम से मशहूर थे। उन्होंने पहले मुगल साम्राज्य के तहत वजीर के रूप में कार्य किया, लेकिन बाद में उनका मोहभंग हो गया।
- **शक्र-खेड़ा की लड़ाई (1724):** किलिच खान ने दक्कन के मुगल वायसराय को हराया और नियंत्रण ग्रहण किया। वह वायसराय बन जाता है और खुद को '**आसफ-जाह**' की उपाधि प्रदान करता है।

अवध:

- **सआदत खान** द्वारा स्थापित, जिसे **बुरहान-उल-मुल्क** के नाम से जाना जाता था। सआदत खान ने नादिर शाह के दबाव के कारण आत्महत्या कर ली, जो उससे भारी लूट की माँग कर रहा था। उनके बाद **सफ़दर जंग** अवध के नवाब बने।

बंगाल:

- **मुर्शिद कुली खान** द्वारा स्थापित, जो बाद में उनके बेटे शुजाउद्दीन को हस्तांतरित हुआ।
- बाद में **अलीवर्दी खान** ने सत्ता संभाली और वार्षिक कर देकर राज्य को मुगल साम्राज्य से स्वतंत्र कर दिया।

मैसूर:

- शुरुआत में मैसूर पर **वाडयार राजाओं** का शासन था, **हैदर अली** ने सत्ता संभाली और अंग्रेजों के साथ लगातार युद्ध में शामिल रहे।

केरल:

- **मार्टिंड वर्मा** के अधीन केरल एक संप्रभु राज्य बन गया, जिसकी **राजधानी त्रावणकोर** थी।
- उन्होंने अपने राज्य को आगे बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए और अपनी सेना को पश्चिमी सिद्धांतों के अनुसार संगठित करने का प्रयास किया।

जाट:

- वर्ष 1669 में, **गोकुला** ने मथुरा में मुगलों के खिलाफ पहले बड़े विद्रोह का नेतृत्व किया। हालाँकि, यह सफल नहीं हुआ।
- बाद में **चूड़ामन और बदन सिंह** ने सफलतापूर्वक भरतपुर राज्य की स्थापना की।
- सबसे उल्लेखनीय जाट नेता **सूरजमल** थे, जिन्होंने आगरा, मथुरा, मेरठ और अलीगढ़ को शामिल करने के लिए क्षेत्रों का विस्तार किया। सूरजमल के बाद जाट राज्य छोटी-छोटी रियासतों में विभाजित हो गया।

सिख:

- **औरंगजेब का शासनकाल**
 - नौवें सिख गुरु, **गुरु तेग बहादुर** को वर्ष 1675 में औरंगजेब द्वारा हिरासत में लिया गया और मौत की सजा दी गई, क्योंकि उन्होंने इस्लाम स्वीकार करने से इनकार कर दिया था।
 - गुरु तेग बहादुर के उत्तराधिकारी **गुरु गोबिंद सिंह** ने औरंगजेब का खुलकर विरोध किया। अपने अधिकारों और धर्म की रक्षा के लिए उन्होंने सिखों को एक हिंसक समूह में बदल दिया। बाद में, वर्ष 1708 में, बंदा बहादुर सिखों के नेता बने, लेकिन वह युद्ध में मारे गए।
- बाद में, **रणजीत सिंह** ने पंजाब क्षेत्र में **12 मिसलों (संघों)** को मिलाकर एक मजबूत सिख साम्राज्य की स्थापना की।
 - वह **सुकर चकिया मिसल** नेता महान सिंह के पुत्र थे।
 - सतलुज से झेलम तक फैले क्षेत्र को रणजीत सिंह ने अपने नियंत्रण में ले लिया। बाद में उन्होंने वर्ष 1802 में अमृतसर और 1799 में लाहौर पर कब्जा कर लिया।
 - रणजीत सिंह ने अंग्रेजों के साथ अमृतसर की संधि पर हस्ताक्षर करके सिस-सतलुज क्षेत्रों पर ब्रिटिश अधिकार को मान्यता दी।
 - हालाँकि, जैसे ही उनका शासनकाल समाप्त हुआ, अंग्रेजों ने उन्हें वर्ष 1838 में शाह शुजा और अंग्रेजी कंपनी के साथ **त्रिपक्षीय संधि** पर हस्ताक्षर करने के लिए मजबूर किया, जिसमें उन्होंने ब्रिटिश सैनिकों को पंजाब से गुजरने की अनुमति देने पर सहमति व्यक्त की।

मराठा:

- पेशवाओं के नेतृत्व में, वे मुगल शासन के सबसे प्रबल विरोधियों के रूप में उभरे। उन्होंने मुगल प्रभुत्व के मुख्य उत्तराधिकारी होने के अधिकार का दावा किया।
- हालाँकि, वे **पानीपत की तीसरी लड़ाई** में अहमद शाह अब्दाली से हार गए और उनके शासन के तहत कभी भी समान भौगोलिक विस्तार प्राप्त नहीं कर सके।

रोहिलखंड और फर्रुखाबाद:

- नादिर शाह के आक्रमण के बाद मुगलों के कमजोर होने के बाद रोहिलखंड साम्राज्य की स्थापना **अली मुहम्मद खान** ने की थी।
- फर्रुखाबाद साम्राज्य की स्थापना दिल्ली के पूर्व के क्षेत्र में एक अफगान मोहम्मद खान बंगश ने की थी।

क्षेत्रीय राज्यों की प्रमुख विशेषताएँ

- अधिकांश ने मुगल साम्राज्य के आधिपत्य को नाम मात्र के लिए स्वीकार किया और कुछ ने इसे नकारना जारी रखा।
- इन राज्यों में क्षेत्रीय राजनीति का उदय हुआ जिसमें प्रांतीय शासकों को स्थिरता बनाए रखने के लिए स्थानीय हितों में रुचि लेनी पड़ी।
- सुदृढ़ वित्तीय, प्रशासनिक और सैन्य संगठन पर आधारित प्रणाली विकसित करने में विफलता ने उनके विकास को सीमित कर दिया।
- पड़ोसी क्षेत्रीय शक्तियों के बीच लगातार युद्ध ने इन सभी राज्यों को इस हद तक कमजोर कर दिया कि मुगलों के बाद अखिल भारतीय स्तर पर कोई भी शक्ति शून्य को भरने में सक्षम नहीं था।
- कृषि आय में आई गिरावट तथा जागीर चाहने वाले मनसबदारों की संख्या में वृद्धि के कारण **जागीरदारी संकट** गहरा गया।

कला, वास्तुकला और संस्कृति का विकास:

- **बड़ा इमामबाड़ा** लखनऊ में आसफ-उद-दौला द्वारा बनवाया गया था।
- सवाई जय सिंह ने **गुलाबी शहर (Pink City)** जयपुर का निर्माण करवाया। उन्होंने दिल्ली, जयपुर, बनारस, मथुरा और उज्जैन में पाँच खगोलीय वेधशालाएँ भी बनवाईं। अंत में, उन्होंने जिज मुहम्मद-शाही तैयार की जो लोगों को खगोल विज्ञान का अध्ययन करने में मदद करने के लिए समय सारिणी का एक सेट था।
- केरल में **पद्मनाभपुरम महल** का निर्माण कराया गया।

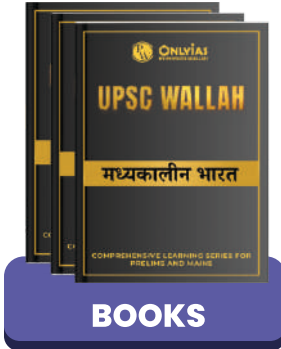
भाषा एवं साहित्य:

- **उर्दू शायरी:** 18वीं सदी में मीर, सौदा, नज़ीर और मिर्जा गालिब जैसे प्रमुख कवियों के साथ फली-फूली।
- **मलयालम साहित्य:** त्रावणकोर शासकों द्वारा समर्थित था जिसमें कुंचन और नाम्बियार जैसे प्रभावशाली कवि शामिल हैं।
- **तमिल में सितार कविता:** तयुमनावर द्वारा मंदिर शासन और जाति की आलोचना के साथ उभरी।
- **पंजाबी महाकाव्य:** वारिस शाह ने हीर रांझा, एक प्रसिद्ध रोमांटिक कृति लिखी।
- **सिंधी साहित्य:** शाह अब्दुल लतीफ द्वारा समृद्ध, जिन्होंने रिसालो लिखा।
- विधवा पुनर्विवाह को हतोत्साहित किया गया; राजा सवाई जय सिंह और परशुराम भाऊ के प्रयासों जिनमें विधवा पुनर्विवाह को बढ़ावा देना विफल रहा।

शिक्षा:

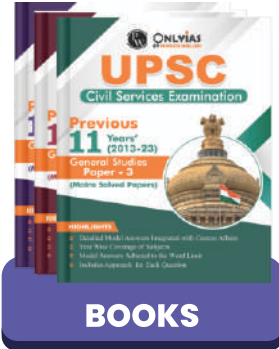
- **पारंपरिक शिक्षा:** साहित्य, कानून, धर्म और तर्क पर केंद्रित, विज्ञान तथा तकनीकी की कमी।
- **प्राथमिक विद्यालय:** मकतब (मुस्लिम) और पाठशालाएँ (हिंदू), मुख्य रूप से गणित पढ़ने और लिखने के लिए।

अन्य पुस्तकें एवं कार्यक्रम



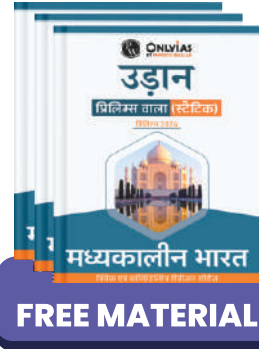
BOOKS

व्यापक कवरेज



BOOKS

पिछले 11 वर्षों के हल प्रश्न-पत्र (PYQs) (प्रारंभिक+ मुख्य परीक्षा)



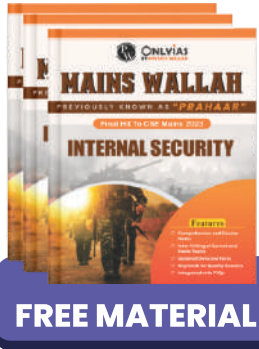
FREE MATERIAL

उड़ान (प्रिलिम्स स्टैटिक रिवीज़न)



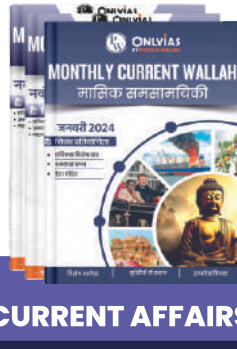
FREE MATERIAL

उड़ान प्लस 500 (प्रिलिम्स समसामयिकी रिवीज़न)



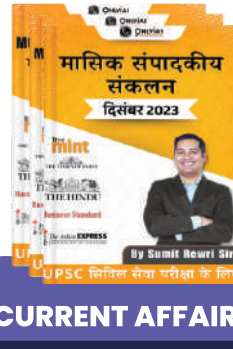
FREE MATERIAL

मेन्स रिवीज़न



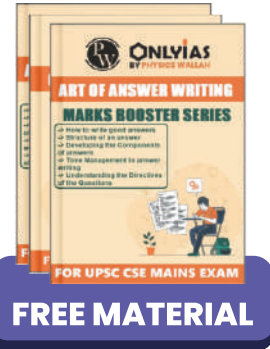
CURRENT AFFAIRS

मासिक समसामयिकी



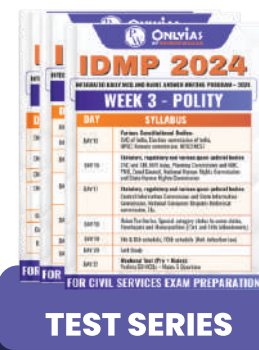
CURRENT AFFAIRS

मासिक संपादकीय संकलन



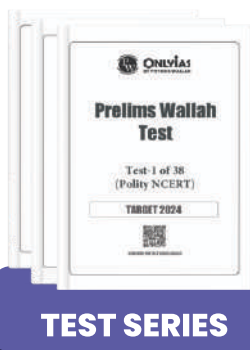
FREE MATERIAL

क्विक रिवीज़न बुकलेट



TEST SERIES

IDMP ईयर लॉन्ग टेस्ट



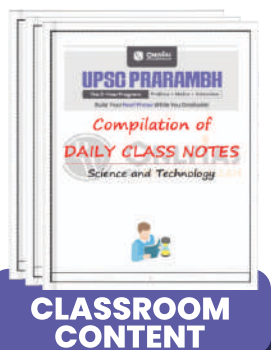
TEST SERIES

35+ प्रिलिम्स टेस्ट



TEST SERIES

25+ मेन्स टेस्ट



CLASSROOM CONTENT

डेली क्लास नोट्स और अभ्यास प्रश्न

All Content Available in **Hindi** and **English**

📍 Karol Bagh, Mukherjee Nagar, Prayagraj, Lucknow, Patna

₹ 289/-



35287719-2d59-44db-9b2c-811bb783a680